ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 15-17
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

पाश्चात्य दर्शन और विज्ञान

भावना सिन्हा
असि0प्रोफे0, राजनीति विज्ञान विभाग, बी.आर.डी.पी.जी. कालेज, देवरिया (उ0प्र0) भारत

Received- 14 .061. 2019, Revised- 18.06. 2019, Accepted - 22.06.2019 E-mail: bhawna.one@gmail.com

सारांश : *मनुष्य पश्चिम का हो या पूरब का, आज की सदी की दहलीज पर पूरब और पश्चिम एक हो गए है ए हम सभी पश्चिम से प्रभावित है। अगर हम दर्शन की बात करे तो सबसे पहले जिस दार्शनिक का नाम आता है वो है सुकरात। आम तौर पर हम सभी बस इतना जानते है की कुछ धर्म विरोधी बाते करने पर इन्हें विष दे दिया गया। पर यह सत्य नहीं है सुकरात को हम तर्क शास्त्री कह सकते है। अब यह बात उठती है की तर्क का क्या अर्थ है। यही सोच दर्शन और विज्ञान को एक करती। सुकरात का शिष्य प्लेटो और प्लेटो का शिष्य अरस्तू भी तर्क शास्त्री थे। ये अपनी बातों पर इतने अडिग रहते थे की अपने गुरुओ की आलोचना करने से भी नहीं डरे।*

कुंजी शब्द – मूल्य, संस्कृति, अध्यात्म, पुरुशार्थ, चिन्तन, मस्तिष्क, अस्तित्व, नास्तित्व, समप्रत्यय, मनोवैज्ञानिक।

एक तरह से हम अपने को अरस्तू का वंशज कह सकते है। हमारा तर्क, हमारी सोच, हमारी बुद्धि अरस्तू की तर्क सारणी से बनी है। अरस्तू ने तर्क का जो ढाँचा दिया है वह मनुष्य के मस्तिस्क में इतना गहरा खुद गया है कि आधुनिक मनुष्य उससे अन्यथा सोच भी नहीं सकता।

हम दर्शन के इतिहास को तीन भागो में बाँट सकते हैः–

1. प्राचीन दर्शन
2. ईसाईयत के उदय के बाद धार्मिक दर्शन
3. विज्ञान के युग के प्रारंभ के पश्चात जन्मा

आधुनिक दर्शन– प्राचीन दर्शन ईसा पूर्व का समय है। प्राचीन दर्शन में मनुष्य की बुद्धि को प्रत्येक विषय पर सोचने का अधिकार था। इसमें ग्रीक दार्शनिकों का योगदान था। इसमें पाइथागोरस, हेराक्लाइटस, इनक्सा, गोरस आदि वैज्ञानिक थे। यह वह समय था जब चीजे संयुक्त थी, जीवन बंटा नहीं था। पाइथागोरस गणितज्ञ था और दार्शनिक भी था। आज हमें यह शायद अचरज लगे लेकिन जब गणित गहराई में उतरता है तो दर्शन में प्रवेश करता है। ग्रीक दार्शनिकों ने जो गणित और ज्यामितीय में खोजे की उससे हमारा संगीत, खगोल विज्ञान, ज्योतिष विज्ञान और दर्शन प्रभावित है।

पाइथागोरस के साथ गणित और धर्म विज्ञान का समन्वय शुरू हुआ। सुकरात ,प्लेटो और अरस्तू यह त्रिमूर्ति पूरे दर्शन शास्त्र की आधारशिला है। सुकरात की चेतना में इतनी सृजन की क्षमता थी कि वह आगे दो पीढियों तक अपनी विचारधारा को चला सका। सुकरात मन के पास था, प्लेटो मन के अंतरिक्ष में था और अरस्तू बुद्धि की जमीन पर उतर आया था। विश्लेषण और तर्क उनके भवन की आधार शिला थी प्लेटो ने अपनी शिक्षा में केवल वैज्ञानिक अध्ययन गणित खगोल विज्ञान और तर्कशास्त्र को ही चुना था। उसने तो अपने ' अकादमी ' के प्रवेश द्वार पर यह अंकित करवाया था कि " ज्यामिति से अपरिचित व्यक्ति यहाँ प्रवेश न करें।"

प्लेटो गणितज्ञ नहीं था लेकिन यूनानियों के ऊपर इसका प्रभाव था। उनके विचारों का गणितज्ञो पर प्रभाव पड़ा और उन्होंने स्वीकार किया कि ज्यामितीय को कम्पास और स्ट्रेटेएज के अतिरिक्त किसी भी उपकरण का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

अरस्तू ने भौतिकी अध्यात्म , कविता, नाटक, संगीत , तर्कशास्त्र , राजनीतिशास्त्र, नीतिशास्त्र ,जीव विज्ञान सहित विषयों पर रचना की। अरस्तू ने अपने गुरु प्लेटो के कार्यो को आगे बढाया। भौतिक विज्ञान पर अरस्तू के विचार ने मध्ययुगीन शिक्षा पर व्यापक प्रभाव डाला और इसका प्रभाव पुनर्जागरण पर भी पड़ा। अंतिम रूप से न्यूटन के भौतिकवाद ने इसकी जगह ले लिया। जीव विज्ञान उनके कुछ संकल्पनाओं की पुष्टि उन्नसवी शताब्दी में हुई।

अरस्तू की गिनती उन महान दार्शनिकों में होती है , जो पहले इस तरह के व्यक्ति थे और परम्पराओं पर विश्वास न हो कर किसी भी घटना की जांच के बाद ही निष्कर्ष पर पहुंचते थे।

इसके बाद धीरे धीरे ग्रीक संस्कृति की खिलखिलाहट कम होती गयी।

मध्य युग का विकास आठवीं शताब्दी से आरम्भ हुआ और ग्यारहवी और बारहवीं शताब्दी में विकास हुआ। दर्शन अब धार्मिक बन गया। विश्वास प्रधान हो गया। पोप लगभग ईश्वर का विकल्प हो गया। लोग साम्राज्यवाद में उलझे रहें। राजनीति ने मनुष्य के जीवन को इस कदर जकड़ लिया कि दर्शन भी राजनैतिक हो गया ।

दुनिया बदल गयी और मध्ययुगीन दार्शनिको ने उन परिवर्तनों के साथ प्रत्याशित और उत्पन्न किया। इस

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

मध्य युग में मैकियावेली एक बेवाक और स्पष्टवक्ता था। राजनीति और समाज में फैले हुए पाखंड और बेईमानी के लिए उसकी सीधे नुकीले वक्तव्य झेलना बर्दास्त के बाहर था। वह कहता था कि यदि राज्य 100 प्रतिशत सवर्ण हो तो नष्ट हो जायेगा ।

सत्रहवी शताब्दी ने एक क्वांटम लीप (समग्र छलांग) लगाई। इससे मानव जीवन ही नहीं पूरी पृथ्वी कि शक्ल ही बदल गयी। इस सदी में चार वैज्ञानिक हुए जिन्होंने विज्ञान युग कि नीव रखी। कोपरनिकस, कैपलर, गैलीलियो और न्यूटन। इन वैज्ञानिको ने अपनी प्रयोगशाला में जो खोजे की उसने मनुष्य को एकदम यथार्थ के धरातल पर खड़ा कर दिया। इन्होने आधुनिक विज्ञान की नींव रखी। इन वैज्ञानिको के पास दो असाधारण गुण थे , अपरिसीमित धीरज के साथ निरीक्षण करना और अपने निष्कर्षो को बहुत साहस के साथ प्रस्तुत करना क्योकि उनके निष्कर्ष धर्म और बाइबिल के विपरीत थे।

अब तक पृथ्वी ब्रम्हांड का केन्द्र थी और गैलीलियो ने दिखा दिया कि बेचारी छोटी सी पृथ्वी बहुत बड़े सूरज का चक्कर लगा रही है। विज्ञान की खोजे धार्मिक अहंकार पर बड़ी चोटे थी।

वैज्ञानिक वातावरण ने एक नए किस्म के दर्शन को जन्म दिया :– वैज्ञानिक दर्शन ५ मनुष्य की पूरी मानसिकता ही बदल रही थी।

आधुनिक वैज्ञानिक दर्शन का जनक है डेकार्ट। अरस्तू के बाद यह पहला बुलंद दार्शनिक था जिसके विचारों में ताजगी थी। डेकार्ट के दर्शन में संदेह सबसे बड़ी विधि थी। वह हर चीज पर संदेह करता था। यहाँ तक कि स्वयं पर भी। उसका प्रसिद्ध वाक्य था " I THINK THERE-FORE I AM", मै सोचता हूँ इसलिए मैं हूँ उन्नीसवीं शताब्दी में दर्शन का एक शिखर पैदा हुआ जर्मनी में– इमानुयल काम्ट। उसके अनुसार चाहे बच्चा हो या बूढ़ा वह किसी और की मर्जी से या दूसरों के इशारों पर चले यह सबसे भयंकर बात है। हीगल ने कहा कि मौलिक सत्ता मन है। विकास में जो क्रम वाह्य जगत में होता है , वही चिंतन में होता है। तर्क और तत्वज्ञान एक ही प्रकार के अध्ययन है

हर्बर्ट स्पेंसर ने भी विषयों की एक व्यापक श्रेणी में अपना योगदान दिया ,जिनमें नीतिशास्त्र ,धर्म, मानविकी ,अर्थशास्त्र ,राजनैतिक सिद्धांत , दर्शन शास्त्र ,जीव विज्ञान, समाजशास्त्र और मनोविज्ञान शामिल है। उन्होंने समाज के निर्माण और उसके भावी विकास में भौतिकी और जीव विज्ञान के तत्वों का मिश्रण करके यह प्रतिपादित किया कि समाज एक विराट जीव के समान है।

आधुनिक काल में मनुष्य की बुद्धि ने फिर स्वाधीन विवेचन का काम उत्सुकता के साथ आरम्भ कर दिया। कुछ लोगो के विचार में बेकन ने इसका मार्ग संकेत किया लेकिन बहुमत डेकार्ट को इसका स्थापक मनाता है । दार्शनिकों के सफल और विफल डेकार्ट को यह प्रेरणा दी कि हो सके तो दर्शन में गणित की निश्चितता को शामिल करें।

डेकार्ट के बाद फिर एक बार दर्शन का अभ्युत्थान हुआ और दार्शनिकों की लम्बी श्रृंखला चली। स्पिन झा, फ्रांसिस, बेकन, लाक, ह्यूम, बर्कले, हीगल और काम्ट। इन्हें हम बुद्धिवादी दार्शनिक कह सकते है।

यहाँ से ईश्वर का अस्तित्व डावांडोल हो जाता है और अंततः उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पैदा हुआ नीत्से घोषित करता है कि ने " GOD IS DEAD", (ईश्वर मर चुका)। नीत्शे ने कहा कि मनुष्य के लिए सर्वोच्च आकांक्षा 'शक्ति की आकांक्षा' है।

दर्शन और विज्ञान के बीच हमेशा ही तर्क वितर्क की स्थिति रही है। ये स्थिति भारत में उतनी गंभीर नहीं है जितनी कि पाश्चात्य देशो में है। इसका कारण यह है कि भारतीय आम तौर पर जन्म से धार्मिक होते है, विज्ञान उन्हें शिक्षा के रूप में प्राप्त होता है। इसलिए विज्ञान उन्हें चुनौती नहीं देता है।

दर्शन अपने पूरे इतिहास में दो हिस्सों से बना है और इन दो हिस्सों का आपस में कोई मेल नहीं है। एक तरफ वह एक सिद्धांत है जो इस सम्बन्ध में सोचता है कि विश्व कैसे बना है और दूसरी तरफ एक नैतिक या राजनैतिक नियम जो हमारे जीवन को बेहतर बना सके। एक भी दार्शनिक इन दोनों को अलग नहीं कर सका। सच तो यह है कि मानवीय बुद्धि उन सभी प्रश्नों के सुनिश्चित उत्तर पाने में असमर्थ है जो मनुष्य जाति के लिए बहुत गहन अर्थो में महत्वपूर्ण है। जैसे संख्या क्या है ? स्थान और समय क्या है ? मन और पदार्थ के मायने क्या है ? यह नहीं कहा जा सकता कि इन सभी प्रश्नों के उत्तर दिए जा सकते है लेकिन अब एक ऐसी विधि खोज ली गयी है जिसके द्वारा हम उत्तर दे सकते है जो सत्य के बहुत करीब हो।

यह विधि है वैज्ञानिक अन्वेषण और निरीक्षण।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डा. अनूप चंद कपूर , प्रिंसिपल ऑफ पोलिटिकल साइंस,1950 ,एस. चंद एवं कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड, राम नगर ,नई दिल्ली, आईएसबीएन– 978–81–219–0276–2
2. डा. बी. एल. फड़िया, पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

साहित्य भवन पब्लिकेशन ,आगरा ,1992 , आईएसबीएन–978–93–5173–312–6

3. जीवन महता, राजनीतिक चिंतन का इतिहास, साहित्य भवन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स(प्रा.)लि. 2008 ,आईएसबीएन–978–93–5073–409–9

4. डा. पुखराज जैन,राजनीतिक चिंतन का इतिहास,2006, साहित्य भवन पब्लिकेशन,आगरा, आईएसबीएन–81–7288–031–6

5. डा. सुरेश चन्द्र सिंहल, प्रतिनिधि राजनीतिक विचारक, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा

6. डा. जे.सी. जौहरी,राजनीति विज्ञान,एस बी पी डी पब्लिकेशन,आगरा आईएसबीएन–978–93–5167–451–1

7. प्रो श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी ,समकालीन राजनीतिक चिंतन,2013,प्रत्युष पब्लिकेशन्स, दिल्ली, आईएसबीएन–978 –93–82171–08–9

*****